नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

समझौते से शांति की राह खुली

पश्चिम एशिया में पिछले साढ़े तीन महीनों से जारी तनाव और युद्ध की आशंकाओं के बीच अमेरिका और ईरान के बीच प्रस्तावित शांति समझौते पर बनी सहमति न केवल क्षेत्र बल्कि पूरी दुनिया के लिए राहत की खबर है. यदि 19 जून को जिनेवा में इस समझौते पर औपचारिक हस्ताक्षर हो जाते हैं, तो यह हाल के वर्षों की सबसे महत्वपूर्ण कूटनीतिक उपलब्धियों में से एक माना जाएगा. इस समझौते ने वैश्विक अर्थव्यवस्था, ऊर्जा बाजारों और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में नई उम्मीद पैदा की है.

पश्चिम एशिया केवल एक क्षेत्रीय भूभाग नहीं है, बल्कि वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति का केंद्र है. यहां किसी भी प्रकार का संघर्ष दुनिया की अर्थव्यवस्था को सीधे प्रभावित करता है. पिछले 107 दिनों से अमेरिका और ईरान के बीच बढ़े तनाव ने तेल बाजारों में अनिश्चितता पैदा कर दी थी. होर्मुज जलडमरूमध्य, जहां से दुनिया के समुद्री तेल व्यापार का बड़ा हिस्सा गुजरता है, उसके प्रभावित होने की आशंका ने ऊर्जा संकट का खतरा बढ़ा दिया था. ऐसे में यदि यह जलमार्ग फिर से पूरी तरह खुलता है तो वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को बड़ी राहत मिलेगी. समझौते की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि दोनों पक्ष युद्ध की बजाय संवाद के रास्ते पर लौटे हैं. अंतरराष्ट्रीय राजनीति में यह संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है कि सैन्य शक्ति की सीमाएं होती हैं, लेकिन कूटनीति के द्वार हमेशा खुले रहते हैं. कतर की मध्यस्थता और यूरोपीय देशों के सहयोग ने यह साबित किया है कि जटिल से जटिल संकट का समाधान भी बातचीत से संभव है.

भारत के लिए यह समझौता विशेष महत्व रखता है. भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा आयात करता है और पश्चिम एशिया उसके लिए रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा समझौते का स्वागत इस बात का संकेत है कि भारत क्षेत्र में स्थिरता और शांति को अपने राष्ट्रीय हितों से जुड़ा हुआ मानता है. यदि कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट का रुझान जारी रहता है तो इससे भारत के आयात बिल, महंगाई और चालू खाते के संतुलन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है.

वित्तीय बाजारों की प्रतिक्रिया भी इसी आशावाद को दर्शाती है. सेंसेक्स में 736 अंकों की बढ़त, निवेशकों की संपत्ति में लाखों करोड़ रुपये की वृद्धि और कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट यह संकेत देती है कि वैश्विक निवेशक इस समझौते को सकारात्मक दृष्टि से देख रहे हैं. हालांकि यह भी सच है कि बाजार अक्सर उम्मीदों पर प्रतिक्रिया देते हैं और वास्तविक परिणाम समझौते के प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करेंगे. फिर भी उत्साह के बीच कुछ सावधानियां आवश्यक हैं. अमेरिका और ईरान के संबंध दशकों से अविश्वास, प्रतिबंधों और टकराव से प्रभावित रहे हैं. परमाणु कार्यक्रम, क्षेत्रीय प्रभाव और सुरक्षा संबंधी मुद्दे अभी भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं. इसलिए यह समझौता अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत है. इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि दोनों पक्ष अपने वादों का कितना ईमानदारी से पालन करते हैं.

दुनिया आज जिस अस्थिर वैश्विक वातावरण से गुजर रही है, उसमें यह समझौता आशा का संदेश लेकर आया है. यदि यह सफल होता है तो न केवल पश्चिम एशिया में शांति की संभावना मजबूत होगी, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी नई ऊर्जा मिलेगी. युद्ध के बजाय संवाद की यह पहल अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए एक सकारात्मक उदाहरण बन सकती है. आखिरकार, स्थायी विकास और समृद्धि का रास्ता संघर्ष से नहीं, बल्कि सहयोग और विश्वास से होकर गुजरता है.

पंडित नेहरू के इंडिया से मोदी जी के भारत तक

हरदीप सिंह पुरी

> पंडित नेहरू ने भारतीय राज्य का ढांचा खड़ा किया था. मोदी जी ने इसे नए सिरे से तैयार किया है ताकि यह उस नागरिक तक पहुंच सके जिसके नाम पर इसे बनाया गया था. मैंने राज्य के इन दोनों रूपों में सेवा की है और मैं जानता हूं कि कतार में खड़ा आखिरी व्यक्ति किस बदलाव को हमेशा याद रखेगा. जो वादा कभी कहीं पहले भरोसे पर मानना पड़ता था, वह अब सीधे उसके अपने हाथों में पहुँच रहा है. यही वह विकसित भारत है जिसे हमने2047 तक बनाने का संकल्प लिया है और जैसा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था- इसकी शुरुआत, कतार के उसी आखिरी व्यक्तितक पहुँच कर होती है.

मोदीजी ने 10 जून, 2026 को प्रधानमंत्री के पद पर अपना लगातार 4399वां दिन पूरा कर लिया. उन्होंने पंडित जवाहरलाल नेहरू के 1952 में पहली निर्वाचित सरकार से 1964 में उनके निधन तक लगातार प्रधानमंत्री रहने के कीर्तिमान को पीछे छोड़ दिया. 1947 से देखें तो सबसे लंबे समय तक लगातार प्रधानमंत्री के पद पर रहने का रिकॉर्ड अब भी पंडित नेहरू के नाम ही है. लेकिन मोदीजी ने उन्हें हमारे गणराज्य के इतिहास में लगातार सबसे लंबे समय तक निर्वाचित शासन प्रमुख रहने के मामले में पीछे छोड़ दिया है.

इस दरमियान मैंने अपना कामकाजी जीवन शासन के अंदर गुजारा है. इस उपलब्धि में मेरी दिलचस्पी गणित के लिहाज से कम है. मेरी ज्यादा दिलचस्पी इसमें है कि इस उपलब्धि को कैसे मापा जा सकता है. पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने सिखाया है कि सरकार को इस बात से आंका जाना चाहिए कि कतार के आखिर में खड़े आदमी तक क्या कुछ पहुंचता है. इसे ही अंत्योदय कहते हैं.पंडित नेहरू के 'इंडिया' और मोदी जी के 'भारत' के बीच का फासला वह दूरी है जिसे इस आखिरी आदमी ने तय किया है. एक निष्पक्ष मूल्यांकन करें तो देखते हैं कि पंडित नेहरू को विरासत में क्या मिला था. उन्हें विरासत में एक ऐसा विभाजित उपमहाद्वीप मिला जो इतिहास के सबसे बड़े जबरन विस्थापन से जूझ रहा था, दो सदियों के औपनिवेशिक शोषण से खोखली हो चुकी अर्थव्यवस्था मिली, ऐसी आबादी मिली जिसमें पांच में से एक से भी कम लोग पढ़-लिख सकते थे और औसत उम्र तीस साल के आस-पास थी.उस विरासत के आधार पर उन्होंने एक ऐसा संवैधानिक लोकतंत्र खड़ा किया जो टिका रहा, जबकि एक के बाद एक स्वतंत्र हुए कई अन्य देश सेना के जनरलों या तानाशाहों के कब्ज़े में चले गए.

योजना आयोग दिशा तय करता था, सार्वजनिक क्षेत्र की अर्थव्यवस्था पर मजबूत पकड़ थी और लाइसेंस प्रणाली यह तय करती थी कि कौन क्या उत्पादन कर सकता है. विश्वविद्यालय, प्रयोगशालाएँ, परमाणु और अंतरिक्ष कार्यक्रम- आज़ाद भारत की संस्थागत नींव उन्हीं वर्षों में रखी गई थी. मैं 1974 में विदेश सेवा में आया और जिस भारत का मैंने प्रतिनिधित्व किया, वह एक गंभीर देश था जिसने अपनी व्यवस्था की क्षमता के अनुसार पूरी गरिमा के साथ अभावों का सामना करने का रास्ता चुना था. उस व्यवस्था की कीमत तब तक साफ दिखने लगी थी जब तक मैं अपने करियर के मध्य पड़ाव पर पहुंचा. सरकार ने योजनाओं का आवंटन करना तो सीख लिया था, लेकिन वह वितरण करना नहीं सीख पायी थी. दिल्ली में घोषित किसी योजना और गाँव में मिलने वाले लाभ के बीच का जो फ़ासला था, वहीं सारा पैसा गायब हो जाता था.

एक पूर्व प्रधानमंत्री का यह मानना कि हर एक रुपये में से सिर्फ पंद्रह पैसे ही गरीबों तक पहुँच पाते हैं, इस मॉडल पर अपने आप में एक बड़ा सवाल था. सरकार योजना तो बना सकती थी, लेकिन वह लोगों तक पहुँच नहीं पाती थी. 2014 में मोदी जी को जो विरासत मिली, उसका भी उतना ही ईमानदार मूल्यांकन होना चाहिए. उन्होंने एक ऐसी अर्थव्यवस्था की कमान संभाली थी जिसे बाज़ार ने फ़्रैजाइल फाइव (पांच सबसे कमजोर अर्थव्यवस्थाओं) की श्रेणी में रखा था; जो अटकी हुई परियोजनाओं के बोझ तले दबी थी, दोहरे अंकों की मुद्रास्फीति और भ्रष्टाचार से घिरी थी जिसने शासन पर से जनता के भरोसे को ही खोखला कर दिया था. इसका समाधान उन्होंने एक बिल्कुल अलग तरह की व्यवस्था बनाकर किया.

योजना आयोग की जगह नीति आयोग ने ले ली, जो राज्यों को निर्देश देने के बजाय उन्हें साथ लेकर चलता है. पहचान (पहचान पत्र), बैंक खाता और मोबाइल फोन को एक साथ जोड़ा गया और सरकार ने बिचौलियों के बजाय, जो चार दशकों से अपना कमीशन ले रहे थे, नागरिकों को सीधे भुगतान करना शुरू कर दिया. प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण एक निर्णायक माध्यम है जो बहुत साधारण लगता है लेकिन इसने शासन के इरादे की बजाय वास्तविक लाभ के मिलने पर ध्यान केंद्रित किया. इसके बाद जो हुआ, वह एक मंच के रूप में सरकार की नई परिकल्पना थी. भारत ने सार्वजनिक डिजिटल ढांचा और एक ऐसी पहचान व्यवस्था बनाई जो पूरे उपमहाद्वीप में काम करती है.

(लेखक केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हैं.)

दिल्ली डायरी

बिखरी टीएमसी को कांग्रेस का सहारा

प्रवेश कुमार मिश्र

चुनावी शिकस्त और अपनों की बेरुखी से टूटते आत्मबल से परेशान टीएमसी को कांग्रेस का भरपूर सहारा मिला है. गांधी परिवार के अलावा कांग्रेसी रणनीतिकारों ने जिस तरह से टीएमसी के बुरे वक्त में आगे बढ़कर महत्व के साथ टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी और अभिषेक बनर्जी को अपनाया है उसकी चौतरफा चर्चा हो रही है.

कहा जा रहा है कि राहुल गांधी ने जिस परिपक्वता के साथ ममता बनर्जी की हौसला-अफजाई करते हुए उनके सामने बहुस्तरीय

विकल्प व व्यापक राजनीतिक संभावनाओं की रूपरेखा रखकर टूटते हौसले को बुलंद किया वह निश्चित रूप से बदले राहुल और बढ़ते कांग्रेसी कद का परिचायक है. कहा जा रहा है कि टीएमसी और कांग्रेस अब पश्चिम बंगाल की राजनीति में संयुक्त रूप से सरकार के खिलाफ गांव से शहर तक किला बंदी करेंगे.

इंडिया गठबंधन में कांग्रेस का दबदबा बढ़ा

लगभग दो वर्षों के अंतराल के बाद इंडिया गठबंधन की बैठक में राहुल गांधी ने जिस अंदाज में सभी सहयोगियों को आईना दिखाते हुए भाजपा के खिलाफ एकजुट होकर मोर्चाबंदी करने की बात कही है उससे साफ है कि कांग्रेस एक तरफ अपने को जमीनी स्तर पर मजबूत करने में जुटी है वहीं दूसरी ओर इंडिया

समूह में शामिल साथी दलों को भी डरे बगैर भाजपा से लड़ने की प्रेरणा दे रही है. यानी कांग्रेस बड़े भाई के रूप में अपने अनुभव को सहयोगियों के साथ साझा कर उसे भी मुकाबले के लिए तैयार करने लगी है. हालांकि राहुल गांधी की केरल वामदल के संदर्भ में दी गई स्पष्ट टिप्पणी से वामदल नाराज हुए है लेकिन सपा व राजद शिवसेना उद्धव जैसे दलों के शीर्ष नेतृत्व ने राहुल की बात और कांग्रेसी प्रस्ताव को हाथों-हाथ लिया.

राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि विपक्षी दल अब कांग्रेस को ही राष्ट्रीय विकल्प मानकर भाजपा की संगठित ताकत से मुकाबले को तैयार हैं.

नए साथियों के कारण लोकसभा में मजबूत हुई मोदी सरकार

टीएमसी के बीस बागी सांसदों का साथ मिलने या उन्हें साथ लाने के बाद लोकसभा में राजग की ताकत अचानक बढ़ गई है. इस बदलते राजनीतिक परिदृश्य से मोदी सरकार को लोकसभा के अंदर मिले नए सहयोगियों से भविष्य में कई अटके विधेयक पारित होने की संभावना बढ़ गई है. अब तक टीडीपी और जदयू पर निर्भर मोदी सरकार को बदले समीकरण में बहुत राहत मिली है क्योंकि इस गुट के अंदर कोई भी ऐसा नेता नहीं है जो सहयोग के लिए सरकार के सामने शर्त रखे. कहा जा रहा है कि मोदी सरकार जल्द ही एक बार फिर लोकसभा सीट बढ़ाने वाले परिसीमन विधेयक को सदन में सुनियोजित योजना के साथ ला सकती है.

देशभर में मीनाक्षी मामले की सच्चाई बताएगी कांग्रेस

राज्यसभा चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार मीनाक्षी नटराजन के नामांकन रद्द किए जाने को सुनियोजित साजिश बताते हुए कांग्रेस पार्टी जहां एक तरफ कानूनी लड़ाई का सहारा लेने जुटी है वहीं दूसरी ओर इस विषय को जनता की अदालत यानी मध्यप्रदेश के गांव -गांव से लेकर देशभर में परिचर्चा के माध्यम से पहुंचाने की तैयारी में है. कहा जा रहा है कि जल्द ही इस विषय को लेकर व्यापक योजना बनाई जा रही है. यह अभियान कोर्ट निर्णय होने तक या विधानसभा चुनाव तक चलाया जाएगा.

राजनीति में बागी, कहां मिलेंगे त्यागी !

पहले लोग त्यागी हुआ करते थे, लेकिन अब बागी होने लगे. जब तक बंगाल में पार्टी की सत्ता थी तब तक 'दीदी' के निष्ठावान उनके प्रति अनुरागी बने रहे, लेकिन चुनाव में हार के बाद आत्मज्ञान हुआ कि हम गलत संगत में थे. दीदी से विरक्ति होने लगी. टीएमसी के बागी सांसद राजनीति की नई मंजिल खोजने लगे. उनके मन की गहराइयों में मोदी के प्रति चाह जाग उठी. उस राह को खोजने लगे जो अमित शाह की ओर जाती है. जिधर दम उधर हम! ममता की छांव से निकलकर दिल्ली की दहलीज पर नाक रगड़ने की ठान ली. कोकोली घोष कोयल के समान कूकने लगीं. उधर ममता बनर्जी सोच रही होंगी- देखी जमाने की यारी, बिछुड़े सभी बारी-बारी! राजनीति में वफादारी पावर से जुड़ी रहती है. पार्टी पावरलेस हो गई तो सांसद बेवफा हो गए ! उन्हें एनडीए का तंबू लुभाने लगा. संविधान में प्रावधान नहीं होने पर भी स्पीकर ओम बिड़ला के सामने प्रस्ताव रखा कि हमें अलग गुट के रूप में मान्यता दें. मालूम पड़ा कि एक और एनसीपी है, जो शरद पवार या सुनेत्रा पवार की पार्टियों से बिल्कुल अलग है. वह नेशनलिस्ट सिटिजन्स पार्टी है. टीएमसी के बागियों ने उसमें विलय कर लिया. कभी चित्रकूट के घाट पर संतों की भीड़ हुआ करती थी, अब बागियों को बीजेपी का घाट आकर्षित कर रहा है. वह घूम-फिर कर वहीं जाना चाहते हैं. बीजेपी पहले ही हाउसफुल है. बंगाल की सत्ता उसके हाथ में आ चुकी है. ममता की पार्टी टूट गई, इतना बीजेपी के लिए काफी है. अब देखना होगा कि स्पीकर क्या निर्णय लेते हैं. क्या बगावत के बाग में फूल खिलेंगे? क्षेत्रीय दलों का टूटना-बिखरना देशवासी देख रहे हैं. विधानसभा चुनाव में बीजेपी की गुगली ने टीएमसी और डीएमके के विकेट ले लिए. ममता और स्टालिन दोनों के हाथ से सत्ता वैसे ही निकल गई जैसे मुट्ठी से रेत खिसक जाती है.

ममता की पार्टी टूट गई, इतना बीजेपी के लिए काफी है. अब देखना होगा कि स्पीकर क्या निर्णय लेते हैं. क्या बगावत के बाग में फूल खिलेंगे? क्षेत्रीय दलों का टूटना-बिखरना देशवासी देख रहे हैं. विधानसभा चुनाव में बीजेपी की गुगली ने टीएमसी और डीएमके के विकेट ले लिए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

राजनीति में चूहे-बिल्ली का खेल क्या विपक्ष में हो पाएगा मेल?

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, क्या आपको नहीं लगता कि आज की राजनीति चूहे-बिल्ली का खेल बनती जा रही है. विपक्षी पार्टियों के नेता इतनी धमाचौकड़ी मचा रहे हैं, लेकिन बीजेपी नेतृत्व के एनडीए के सामने पूरी तरह बेबस हैं. उनके सामने सबसे बड़ा प्रश्न है कि बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधेगा? इसके लिए आगे आने का दम किसमें है?'

हमने कहा, 'यह सवाल ही बेतुका है. क्योंकि घंटी गाय-बैल के गले में बांधी जाती है. हमने आज तक किसी बिल्ली के गले में घंटी बंधी नहीं देखी.'

पड़ोसी ने कहा, 'बिल्ली के गले में घंटी बांधना एक कहावत है. चूहों ने विचार किया कि यदि बिल्ली के गले से घंटी लटका दी जाए तो उसके बजने से पता चल जाएगा कि वह उनका शिकार करने आ रही है. इससे उन्हें सतर्क होकर बच निकलने का मौका मिल जाएगा. आपने पुरानी फिल्म का बालगीत सुना होगा- छुपा छुपी ए लो छुपी, आगड़-बागड़ जाई रे, चूहे मामा ओ मामा भाग बिल्ली आई रे!'

हमने कहा, 'बिल्ली शिकार करने से पहले चूहे को खिलाती है और फिर लपककर मुंह में दबा लेती है. विपक्षी दल भी घबराए हुए हैं. प्रलोभन और दबाव के जरिए उन्हें तोड़ा जाता है. जांच एजेंसियां उनके पीछे लग जाती हैं. राकां, शिवसेना और 'आप' के बाद टीएमसी की बारी है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, किशोरकुमार और नूतन की फिल्म 'दिल्ली का ठग' में गाना था- सीएटी कैट, कैट माने बिल्ली, आरएटी रैट, रैट माने चूहा, दिल है तेरे पंजे में तो क्या हुआ ! टॉम एंड जेरी की कार्टून फिल्म आपने टीवी पर देखी होगी. टॉम नामक बिल्ले को जेरी नामक चूहा खूप छकाता है. चूहे को अंडरएस्टिमेट मत कीजिएगा. वह बुद्धि विधाता गणेशजी का वाहन है. जब सुरंग ढहने से मजदूर अंदर फंस जाते हैं और पत्थर काटने वाली मशीनें भी उन्हें बचाने में असमर्थ रहती हैं तो रैटमाइनर कहलाने वाले श्रमिक छेनी हथोड़ी से चट्टानें काटकर फंसे हुए लोगों को बाहर निकालते हैं. सत्तापक्ष किसी मजबूत चट्टान से कम नहीं है. विपक्ष यदि एकजुट होकर रैटमाइनर की तरह लगन से भिड़ जाए तो कभी न कभी उसे कामयाबी मिल सकती है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12291

-डॉ. सागर खादीवाला

1		2	3	■	4	5	■
	■	6		■	7		8
9	10		■	11			
■	12		13		■	■	
14		■	15		16	■	
	■	17		■	18	19	■
20	21		■	22			23
24					■	25	

बाएं से दाएं

1.कुचली हुई चीज, भर्ता 4. स्त्रियों के लिए संबोधन 6. नमक 7. सूत या सन की बनी हुई डोरी 9. भगवान, शिव 11. पनाला, नाबदाना, मोरी 12. जो ऊबड़खाबड़ न हो 14. रुपए, दौलत, संपत्ति 15. व्याकुल, बेचैन (उर्दू) 17. घर, मकान, जगह (सं.) 18. लज्जा 20. स्थिर, स्थापित 22. काम, हुनर, करामात 24. नाम रखने का काम या संस्कार 25. गंदे जल के बहने का मार्ग

ऊपर से नीचे

1. कमाया हुआ धन, उपार्जित धन, कमाने का धंधा 2. मन को लुभाने वाला, सुंदर (सं.) 3.. रण, युद्ध, जंगल 4. राक्षस, दैत्य, दानव, दुष्ट (सं.) 5. रिक्त होना 8. क्रीड़ा करने वाली, प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की पत्नी 10. सांस लेना (सं.) 11. आंख के ऊपर का पर्दा 13. अस्तबल 14. डराना, डांटना 16. हिलोर, तरंग 17. शमन करने वाला 19. कष्ट, पीड़ा 21. मृत्यु के देवता 22. बहुत छोटा टुकड़ा, रवा, अन्न का एक दाना 23. विपत्ति, आपत्ति, प्रेतबाधा

Solution 12290

ह	र	जा	ई	■	मि	या	द
र	■	प	द	त	ल	■	श
सिं	■	क	■	फ	न	का	र
गा	था	■	प	री	■	न	थ
र	ह	न	स	ह	न	■	■
■	■	पा	ली	■	■	पी	क
अ	पि	तु	■	■	मा	त	म
■	क	ला	कु	श	ल	■	ल

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्र अथवा व्यक्ति विशेष का सहयोग मिलेगा, स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा, शासन से लाभ प्राप्त होने का योग है, वर्ष के मध्य में शत्रु वर्ग प्रबल रहेगा, भोग विलास में धन व्यय होगा, मित्रों का सहयोग रहेगा, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में व्यर्थ वाद विवाद से बचने का प्रयास करें, यात्रा में कष्ट होगा, शारीरिक चिन्ता और मानसिक कष्ट होगा, पारिवारिक परेशानी में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के लिये शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, भोग विलास में धन व्यय होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्वजनों से मतभेद हो सकता है, मान सम्मान के प्रति सतर्क रहें, कर्क राशि के व्यक्तियों को संयम से काम लेना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता में संलग्नता रहेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नौकरी में परेशानी के बाद लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, चतुर, भाग्यवान, तथा परिश्रमी रहेगा, जिस कार्य को ठान लेगा, उसे पूरा करके ही छोड़ेगा, शिक्षा अच्छी होगी, व्यापार और नौकरी दोनों में अच्छी तरक्की करेगा, धार्मिक कार्यो में झुकाव रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

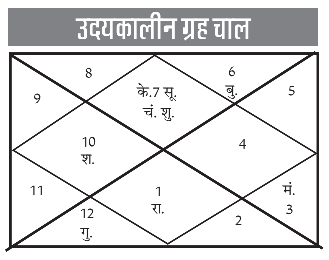

पंचांग

रा.मि. 27 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया बुधवासरे रात 1/40, पुनर्वसु नक्षत्रे शाम 5/39, ध्रुव योगे रात 1/25, तैतिल करणे सू.उ. 5/13, सू.अ. 6/47, चन्द्रचार मिथुन दिन 12/1 से कर्क, शु.रा. 3, 5, 6, 9, 10, 1 अ.रा. 4, 7, 8, 11, 12, 2 शुभांक- 5, 7, 1.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड चीनी, में पूर्व की चाल रहेगी, जीरा, धनियां, हल्दी में मंदी होगी, सोना, चांदी, में उतार चढ़ाव रहेगा, वायदा विचार आज जिस कार्य में वस्तु के भाव टूटें उसी में अगले दिन तेजी होगी. भाग्यांक 2607 है.

मेष- सुविधा की कमी से कार्य में मुश्किल आयेगी, अनुभव का लाभ मिलेगा, नौकरी तथा राजकीय कार्यो में अच्छा समाचार मिलेगा.

वृषभ- मतभेद दूर होने से रिश्ते मजबूत होंगे, रूखे व्यवहार से मित्र वर्ग नाराज होगा, पुराना कार्य बनेगा, अचानक धन लाभ होने का योग है.

मिथुन- डूबा धन मिलने के आसार है, अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी, रोगी की चिन्ता रह सकती है. व्यवसाय से लाभ होगा, मित्रों से मतभेद हो सकता है.

कर्क- सामाजिक कार्यो से जुड़े लोगों से अच्छा लाभ होगा, सुख सुविधा पर खर्च संभव है, भूमि भवन मकान आदि के कार्यो में समस्या का समाधान होगा.

सिंह- कार्य के संबंध में अनुकूल आश्वासन मिलेंगे, लापरवाही से काम पूरे नहीं होंगे, दिदनचर्या नियमित रहेगी, परिश्रम अधिक करना होगा.

कन्या- दुविधा की स्थिति में फैसला लेना मुश्किल होगा, गुमी वस्तु मिलने का योग है, पारिवारिक दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी, परिश्रम अधिक करना होगा.

तुला- अपने लोग ही उलझाने का प्रयास कर सकते हैं, मांगलिक कार्य पर विचार होगा, मान सम्मान में वृद्धि होगी, व्यक्ति विशेष की सलाह लेना हितकर रहेगा.

वृश्चिक- सामूहिक कार्य में सभी की सलाह लाभदायक रहेगी, सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, सामाजिक कार्यो में सफलता प्राप्त होगी.

धनु- बातो बातों में नई शुरूआत हो सकती है, जरूरतें पूरी करने उधारी संभव है, पुराने पेंडिंग पड़े कार्य बनेंगे, योजनाओं का विस्तार होगा.

मकर- राजकीय मामलों में लापरवाही से नुकसान होगा, शादी विवाह की चर्चा में सफलता मिलेगी, अधूरे कार्यों में गति आयेगी, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी.

कुम्भ- धार्मिक आयोजन में खर्च होगा, न चाहते हुये भी लोगों की आलोचना झेलना पड़ सकती है, सोचे कार्य बिलंब से होंगे, विवादों का समाधान होगा.

मीन- कानूनी पक्ष मजबूत होगा, करीबी लोगों के व्यवहार से दुख होगा, मानसिक अस्थिरता रहेगी, नियमित कार्यो में व्यवधान आ सकता है.

SUDOKU 7423

	8	1				2	5	
2								9
5			1		7	4		
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
		7	2		5			1
6								7
	1	5				6	9	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7422

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	6	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1